7

भारतीय भाषाएँ तथा साहित्य-II

किसी भी संस्कृति की समृद्धि को देखा और सराहा जा सकता है पर जब बात भाषा और साहित्य की होती है तो उसे सुनना और पढ़ना आवश्यक हो जाता है। हमें अपनी संस्कृति के इस विशिष्ट पक्ष पर गर्व होना चाहिए और इसकी सराहना करनी चाहिए। हमें इस काल में लिखी गई, जितनी सम्भव हो, पुस्तकें पढ़नी चाहिएँ जिनसे हमें यह समझने में सहायता मिलेगी कि किस समय में क्या-क्या घटित हुआ। इससे हमें अन्य पुस्तकों को भी पढ़ने में सहायता मिलेगी और आज जो कुछ हमारे चारों ओर घटित हो रहा है उन अनेक विषयों के बारे में हम परिचित हो सकेंगे।

इस पाठ में हम आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा उनके साहित्य के विकास के बारे में पढेंगे। हम आधुनिक भारतीय भाषाओं के आरंभिक शब्दकोश और व्याकरण को तैयार करने में ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा निभाई गई भूमिका के विषय में जानेंगे, जिससे पता चलेगा कि कैसे इन लोगों ने आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास में सहायता की है। इसके अतिरिक्त हम आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास में भक्ति आंदोलन और राष्ट्रवाद की भूमिका भी जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:–

- आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास का क्रमबद्ध तरीके से उल्लेख कर सकेंगे;
- विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य और भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के बीच आपसी संबंध को पहचान सकेंगे;
- भारतीय भाषाओं और इनके साहित्य में मूलरूप से निहित एकता और अंदरूनी विविधता का उदाहरण दे सकेंगे;

- भारतीय समाज के पुनर्जागरण में भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के योगदान का परीक्षण कर सकेंगे;

7.1 उत्तर भारतीय भाषाएँ और साहित्य

हम यह देख चुके हैं कि प्रारंभिक मध्यकाल तक कैसे भारत में हमारी भाषाएँ विकसित हुईं। प्राचीन अपभ्रंश आदि भाषाएँ कुछ क्षेत्रों में नए रूप ले चुकी थीं या दूसरे रूपों में विकसित होने की प्रक्रिया में थीं। ये भाषाएँ दो स्तरों पर विकसित हो रही थीं, बोलचाल की भाषा के स्तर पर और लिखित भाषा के स्तर पर। अशोक के काल में प्राचीन ब्राह्मी लिपि में अत्यधिक परिवर्तन हो चुका था। अशोक के काल में इसकी वर्णमाला आकार में विषम थी किन्तु हर्ष के समय तक अक्षर समान आकार के और नियमित हो गए थे, जो सुघढ़ लेखन को प्रदर्शित करते थे।

अध्ययनों से पता चलता है कि उर्दू को छोड़कर, वर्तमान उत्तर भारतीय भाषाओं की सभी लिपियों का उद्‌गम प्राचीन ब्राह्मी लिपि से हुआ है। एक सुदीर्घ और धीमी प्रक्रिया ने उन्हें यह रूप दिया। यदि हम गुजराती, हिन्दी और पंजाबी की लिपियों की तुलना करें, तो हम आसानी से इस परिवर्तन को समझ सकते हैं। जहाँ तक बोली जाने वाली भाषाओं का संबंध है, भारत में इस समय 200 से अधिक भाषाएँ या बोलियां बोली जाती हैं। कुछ का प्रयोग विस्तृत क्षेत्र में होता है और अन्य का केवल एक सीमित क्षेत्र में। इनमें से 22 भाषाओं को ही हमारे संविधान की 8वीं अनुसूची में स्थान मिला है।

अधिकांश लोग विभिन्न रूपों में हिन्दी भाषा बोलते हैं जिनमें ब्रज भाषा, अवधी (अवध क्षेत्र में बोली जाने वाली) भोजपुरी, मगधी और मैथिली (मिथिला के आसपास बोली जाने वाली), राजस्थानी और खड़ी बोली (दिल्ली के आसपास बोली जाने वाली आदि भाषाएँ सम्मिलित हैं) भी हिन्दी का ही एक भिन्न रूप या बोली है। यह वर्गीकरण सुदीर्घ अवधि में कवियों द्वारा सृजित साहित्य के आधार पर किया गया है। अतः सूरदास और बिहारी द्वारा प्रयुक्त भाषा को ब्रज भाषा का नाम दिया गया है, तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में जिस भाषा का प्रयोग किया, उसे अवधी और विद्यापति द्वारा प्रयुक्त भाषा को मैथिली कहा गया। किन्तु हिन्दी को जिस रूप में हम आज जानते हैं, यह खड़ी बोली है। यद्यपि खड़ी बोली का प्रयोग तेरहवीं शताब्दी में खुसरों ने भी किया है, परंतु इसका साहित्य में व्यापक प्रयोग उन्नीसवीं सदी से अधिक पुराना नहीं है। इस पर उर्दू का भी कुछ प्रभाव है।

7.2 फारसी तथा उर्दू

चौथी शताब्दी के अंत तक उर्दू एक स्वतंत्र भाषा के रूप में स्थापित होने लगी। तुर्कों और मुगलों के भारत में आने से फारसी और अरबी भाषा भी आ गईं। फारसी कई सदियों तक अदालतों की भाषा रही। हिन्दी और फारसी के मिलने से उर्दू का एक भाषा के रूप में जन्म हुआ।

टिप्पणी

तुर्की लोग दिल्ली को जीतने (1192 ई.) के उपरांत इस क्षेत्र में ही बस गए। उर्दू का जन्म इन नए निवासियों तथा शिविर में रहने वाले सैनिकों की आम लोगों के बीच की अन्त:क्रिया से हुआ। मूलत: यह एक बोली थी परंतु धीरे-धीरे इसने एक औपचारिक भाषा का रूप धारण कर लिया जब लेखकों ने फारसी लिपि का प्रयोग करना आरंभ कर दिया था। आगे चलकर अहमदनगर, गोलकुण्डा, बीजापुर एवं बिराड़ के बहमनी राज्यों में इस भाषा के प्रयोग को और अधिक बल मिला। यह यहाँ पर दक्कनी (दक्षिणी) कहलाई। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया यह दिल्ली की विशाल जनता में प्रसिद्ध होती गई।

अठारहवीं सदी के आरंभ में उर्दू और भी लोकप्रिय हो गई। विद्वानों ने परवर्ती मुगल शासकों के बारे में उर्दू भाषा में लिखा। धीरे-धीरे इसने एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया जब गद्य और पद्य, दोनों तरह का साहित्य उर्दू भाषा में रचा जाने लगा।

अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर ने उर्दू में शायरी लिखी। हिन्दी और उर्दू-भाषी क्षेत्रों में उनके लिखे कुछ शेर आज भी काफी लोकप्रिय हैं।

उर्दू को एक गौरवशाली स्थान दिलाने में कई शायरों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है, जिन्होंने उर्दू में शायरी की, और जो भावी पीढ़ियों को भी प्रभावित करती रहेगी। उर्दू के पहले कवि खुसरो (1253-1325) माने जाते हैं। उन्होंने सुलतान बलबन के राज्य में एक कवि के रूप में लिखना शुरू किया और वे निजामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे। उन्होंने विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखीं तथा अनेक दोहों की रचना की। उनके कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं– लैला-मजनू और आइनाए अकबरी जो अलाउद्दीन खिलजी को समर्पित थे। अन्य कवियों-शायरों में गालिब, जौक, हाली और इकबाल का नाम प्रमुख है। इकबाल का उर्दू काव्य उनके संकलन 'बांग-ए-दरा' में संकलित है। उनका 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' गीत भारत में अनेक राष्ट्रीय समारोहों में गाया जाता है। कोई भी सैनिक परेड इस धुन के बिना अधूरी समझी जाती है।

भारत के दिल्ली जेसे बड़े शहर में गालिब, मौमिन, बुल्लेशाह, वारिसशाह आदि अनेक प्रसिद्ध कवियों को कविता, गजल/नज्म सुनाने के लिए बुलाया जाता है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि हमारी भाषा एवं साहित्यिक सम्पदा कितनी समृद्ध है जो आज तक भी जीवित है? इसने हमारा जीवन बनाया है। यह लोगों के मिलने-जुलने का और परस्पर सम्पर्क करने के प्रमुख साधन हैं।

सर्वश्रेष्ठ गद्य लेखकों में एक नाम पंडित रतननाथ 'सरशार' का है, जिन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक 'फसाना-ए-आजाद' लिखी थी। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार माने जाने वाले मुंशी प्रेमचंद्र ने भी अपने आरंभिक लेखनकाल में उर्दू में ही साहित्य रचना की। उर्दू भाषा ने कविता को एक नया रूप दिया है, जिसे 'नज़्म' कहा जाता है। लखनऊ के नवाबों ने उर्दू को संरक्षण दिया और मुशायरों का आयोजन करवाया। धीरे-धीरे यह भाषा बहुत लोकप्रिय हो गई। पाकिस्तान ने उर्दू भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया है।

मुगल काल में साहित्य का उत्थान

मुगल काल में साहित्य के क्षेत्र में असाधारण विकास हुआ। बाबर तथा हुँमायु साहित्य के प्रेमी थे। बाबर स्वयं फारसी भाषा का महान् विद्वान था। उसने 'तुजुके-ए-बाबरी' नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी जिसका तुर्की साहित्य में विशिष्ट स्थान है। हुँमायु ने अरबी भाषा में इस ग्रन्थ का अनुवाद करवाया। वह भी विद्वत्ता का प्रेमी था और उसने एक बड़ा सा पुस्तकालय भी स्थापित किया। ''हुँमायुनामा' उस समय की उच्चतम पुस्तकों में से एक है।

अकबर भी विद्वत्ताप्रिय था। उसके ज़माने में लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तकें हैं– अकबरनामा, सूरसागर और रामचरितमानस, मलिक मोहम्मद जायसी का ''पद्मावत'' तथा केशव की 'रामचन्द्रिका' इसी समय में लिखी गईं। जहांगीर ने साहित्य को बढ़ावा दिया। अनेक विद्वानों ने उसकी सभा को शोभित किया। वह भी ऊँची योग्यता वाला विद्वान था उसने अपनी जीवनी भी लिखी। शाहजहाँ के काल में अब्दुल हमीद लाहौरी नामक प्रसिद्ध विद्वान था। उसने बादशाह-नामा लिखा। औरंगजेब के समय में साहित्यिक कार्य बाधित हुआ। ,

मुगल शासकों के अंतिम दिनों में उर्दू साहित्य का विकास आरंभ हुआ। इसका श्रेय सर सैयद अहमद खान तथा मिर्जा गालिब को जाता है। सर सैयद अहमद खान की भाषा बहुत सरल तथा प्रभावी थी। उन की रचनाओं ने उस समय के उर्दू के प्रसिद्ध कवि मिर्जा गालिब को प्रेरणा दी। उन्होंने उर्दू शायरी को ऊँचाई पर ले जाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य उर्दू के लेखक है जिन्होंने उर्दू शायरी में रुचि दिखाई तथा उर्दू साहित्य को समृद्ध बनाया।

'मौलवी अलताब हुसैन अली', 'अकबर इलाहाबादी' तथा डा. मोहम्मद इकबाल आदि कुछ अन्य सुप्रसिद्ध नाम हैं।

कचहरी की भाषा फारसी होने के कारण उस समय में बहुत सा साहित्य फारसी भाषा में लिखा गया। अमीर खुसरो, अमीर हसन देहलवी ने फारसी में उत्तम कविताएँ लिखी। 'मीब्नहस-उस-सिराज' जिया बरानी तथा ईब्नेबतूता जो उस समय भारत में आए थे उन्होंने शासकों के महत्त्वपूर्ण राजनीतिक कार्य तथा घटनाओं की कहानियाँ फारसी भाषा में लिखीं।

मध्यकालीन भारत में फारसी भाषा को राजदरबार की भाषा के रूप में मान्यता मिली। अनेक ऐतिहासिक तथ्य, प्रशासनिक नियमावलियाँ और इससे संबंधित सहायक साहित्य फारसी में भी उपलब्ध है। मुगलशासक विद्वत्ता और साहित्य के बहुत बड़े संरक्षक थे। बाबर ने अपनी ''तुजुके-ए-बाबरी'' (आत्मकथा) तुर्की भाषा में लिखी, किन्तु उसके पोते अकबर ने उसका अनुवाद फारसी में करवाया। अकबर ने कई विद्वानों को संरक्षण दिया। तथा संस्कृत में लिखे महाभारत का अनुवाद भी फारसी भाषा में करवाया। जहांगीर की आत्मकथा ''तुजुके-ए-जहांगीरी'' फारसी भाषा में है और एक उत्तम साहित्यक ग्रन्थ है। कहा जाता

है कि नूरजहां एक उम्दा फारसी कवयित्री थीं। मुगल-दरबारियों ने विपुल मात्रा में फारसी साहित्य की रचना की है। अबुल फजल का ''अकबरनामा' एवं 'आईना-ए-अकबरी' एक उत्कृष्ट साहित्य कृति है। इससे हमें अकबर ओर उसके काल के विषय में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है। फैजी ने सुंदर फारसी काव्य की रचना की। मुगलकाल के पत्रों के अनेक संग्रह (इंशा) उपलब्ध हैं। मुगल इतिहास पर प्रकाश डालने के अलावा ये, पत्र-लेखन की शैलियों का उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं। गद्य और इतिहास लेखन में एक अन्य नाम चंद्रभान का है, जो शाहजहां के समय के लेखक थे। इसी प्रकार हमारे पास ''तबकात-ए-आलमगिरी'' नामक एक कृति है जो औरंगजेब के शासन काल पर प्रकाश डालती है। बदायूँनी अकबर के काल के एक अन्य लेखक थे। बीसवीं सदी में इकबाल ने उत्कृष्ट फारसी काव्य की रचना की। अब ये सब भारतीय विरासत और संस्कृति के अंग बन गए।

इस समय के प्रसिद्ध हिन्दी (विभिन्न रूपों में हिन्दी) कवि थे कबीर, तुलसीदास, सूरदास और रहीम। कबीर के दोहे आज भी लोकप्रिय हैं जबकि तुलसीदास द्वारा रचित ''रामचरितमानस'' हिन्दु समाज में सबसे अधिक पवित्र ग्रंथ माना जाता है। बिहारी द्वारा रचित ''सतसई'' अकबर के शासन काल का प्रसिद्ध काव्य है। अकबर के दरबार में केशव मिश्र ने ''अलंकारशेखर'' की रचना की। संस्कृत रचनाओं की लेखन शैली पर यह महान कार्य था। अकबर ने अनेक संस्कृत ग्रंथ जैसे भगवद्गीता तथा उपनिषदों का भी फारसी में अनुवाद करवाया।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. हिन्दी भाषा के क्या विविध प्रकार हैं?

   ....

2. तुलसीदास ने ''रामचरितमानस'' में कौन-सी भाषा में लेखन कार्य किया?

   ....

3. भारत में उर्दूभाषा का प्रयोग कैसे प्रारम्भ हुआ?

   ....

4. किस देश में उर्दू राष्ट्र भाषा है?

   ....

5. दक्खन में उर्दू भाषा को क्या कहते हैं?

   ....

7.3 हिन्दी साहित्य

इस काल में क्षेत्रीय भाषाएँ जैसे हिन्दी, बंगाली, असमी, उड़िया, मराठी तथा गुजराती आदि का अत्यधिक विकास हुआ। 14वीं शताब्दी में दक्षिण में मलयालम एक ऐसी ही स्वतंत्र भाषा के रूप में प्रकट हुई। इन सब भाषाओं के प्रकट होने के कारण संस्कृत का पतन होने लगा, क्योंकि फलस्वरूप ये भाषाएँ प्रशासनिक कार्य प्रणाली में काम करने का माध्यम बनने लगीं। भक्ति आंदोलन का उदय होने तथा विभिन्न संतों के द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करने से इन भाषाओं के विकास में वृद्धि हुई। उत्तरी और पश्चिमी भारत में विकसित विभिन्न बोलियों का हम पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। 'पृथ्वीराज रासो' को हिन्दी भाषा की पहली पुस्तक माना जाता है। यह दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान की वीरता का लेखा-जोखा है। इसके अनुकरण में अनेक रासो ग्रंथों की रचना की गई। हिन्दी भाषा में परिवर्तन होते रहे हैं, क्योंकि जिन क्षेत्रों में यह बोली जाती थी उनका विस्तार होता गया। नई परिस्थितियों को व्यक्त करने के लिए नए शब्द या तो गढ़े गए या इसके प्रभाव के अंतर्गत आने वाले नए क्षेत्रों से ले लिए गए हैं। मार्गदर्शन के लिए हिन्दी साहित्य ने संस्कृत के शास्त्रीय ग्रंथों को आधार बनाया और भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' को हिन्दी लेखकों ने ध्यान में रखा। दक्षिण में बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी में एक आंदोलन प्रारम्भ हुआ जिसे भक्ति आंदोलन कहा गया था। जब दक्षिण के संत उत्तर भारत पहुँचे, तो पहले से ही हिंदी में रचे जा रहे गद्य और पद्य उनके प्रभाव से मुक्त न रह सके। इस समय की कविताओं का मुख्य चरित्र भक्ति रस हो गया। कुछ कवि जैसे तुलसीदास सीमित क्षेत्र में रहे और उन्होंने काव्य रचना उस क्षेत्र की भाषा में की, जहाँ के वे निवासी थे। दूसरी ओर कबीर जैसे अन्य कवि एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे, और इसलिए उनकी कविता में फारसी के साथ-साथ उर्दू भाषा के शब्द भी आ गए। यह सही है कि तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना वाल्मीकि रचित 'रामायण' के आधार पर की, किन्तु लोककथाओं में उपलब्ध कुछ नए दृश्यों और स्थितियों को भी उन्होंनें इसमें जोड़ा। वाल्मीकि रामायण में सीता का निष्कासन वर्णित है, किन्तु तुलसीदास के मानस में इसका उल्लेख नहीं है। तुलसीदास ने अपने नायक को देवत्व प्रदान किया है जबकि वाल्मीकि ने अपने नायक को मनुष्य ही रहने दिया है।

7वीं तथा 8वीं शताब्दी तथा 14वीं सदी के मध्य अपभ्रंश से हिंदी विकसित हुई। इस समय की वीरता पूर्ण कविता के कारण इसको 'वीरगाथा काल' या 'आदिकाल' कहा गया। ये कवि राजपूत शासकों की वीरता तथा दया की प्रशंसा करते थे जिनका इन्हें संरक्षण प्राप्त था। उस समय के सबसे ज्यादा प्रसिद्ध संत कबीर और तुलसीदास थे। आधुनिक समय में खड़ी बोली अधिक प्रसिद्ध हो गई और संस्कृत भाषा में भी विविध साहित्य लिखा गया।

इसी प्रकार, सूरदास ने 'सूरसागर' की रचना की, जिसमें उन्होंनें कृष्ण का चित्रण एक नवजात शिशु के रूप में, नटखट लड़के के रूप में और गोपियों के साथ रास रचाने वाले युवक के रूप में किया है। श्रोताओं के मन पर इन कवियों ने गहरा प्रभाव छोड़ा। यदि राम और कृष्ण से जुड़े त्यौहार इतने अधिक लोकप्रिय हुए है तो इसका श्रेय इन कवियों को ही

जाता है। इनकी कृतियां न केवल अन्य कवियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं बल्कि मध्ययुगीन चित्रकारों को भी इन्होंने प्रेरित किया। इन्होंने मीराबाई, जो राजस्थानी भाषा में पद रचना करती थीं, इनको और रसखान को प्रेरित किया। यद्यपि, रसखान मुसलमान थे, पर उन्होंने कृष्ण-भक्ति के पद लिखे हैं। कृष्ण भक्त कवियों में एक महत्त्वपूर्ण नाम नंददास का है। रहीम और भूषण अलग धारा के कवि हैं। इनके काव्य का विषय भक्ति नहीं, बल्कि आध्यत्मिक था। बिहारी ने सतरहवीं सदी में 'सतसई' लिखी। इनके दोहों में शृंगार (प्रेम) के साथ अन्य रसों का भी सुंदर वर्णन है।

कबीर को छोड़कर उक्त सभी कवियों ने अपनी भावनाओं को अनिवार्यत: अपनी धार्मिक प्रवृत्तियों को संतुष्ट करने के लिए व्यक्त किया। कबीर संस्थागत धर्म में विश्वास नहीं करते थे। वे निराकार ईश्वर के भक्त थे। उस ईश्वर का नाम लेना ही उनके लिए सब कुछ था। इन सब कवियों ने उत्तर भारतीय समाज को इस प्रकार प्रभावित किया जैसा पहले कभी नहीं हुआ था। चूंकि कविता को याद रखना गद्य की अपेक्षा सरल है इसलिए ये भक्त कवि अत्यंत लोकप्रिय हुए।

पिछले 150 वर्षों में अनेक लेखकों ने आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास में योगदान दिया है जिसमें अंग्रेजी के साथ-साथ अन्य विविध क्षेत्रीय भाषाओं में भी पर्याप्त साहित्य लिखा गया। बंगाली लेखकों में से एक महान लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर हुए जिन्होंने प्रथम भारतीय के रूप में 1913 में अपनी 'गीतांजलि' कृति पर नोबल पुरस्कार प्राप्त किया।

तथापि, उन्नीसवीं सदी के आरंभ में ही हिन्दी गद्य अपने सही रूप में आ सका। भारतेंदु हरिश्चंद्र हिन्दी के आरंभिक नाटककारों में से एक थे। उनके कुछ नाटक संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के नाटकों के अनुवाद हैं। उन्होंने नई परंपरा की शुरूआत की। महावीर प्रसाद द्विवेदी एक अन्य लेखक थे, जिन्होंने संस्कृत के ग्रंथों का अनुवाद अथवा रूपांतरण किया। बंकिम चंद्र चटर्जी (1838-94) ने मूलत: बांग्ला में उपन्यास लिखे जिनका हिन्दी में अनुवाद हुआ और ये बहुत लोकप्रिय हुए। ''वंदेमातरम्'' जो कि हमारा राष्ट्रीय गीत है, उनके उपन्यास 'आनंद मठ' का ही एक अंश है। हिन्दी में स्वामी दयानंद सरस्वती के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। मूलत: वे गुजराती थे और संस्कृत के विद्वान थे, तथापि उन्होंने हिन्दी को पूरे भारत की आम भाषा बनाने का समर्थन किया। उन्होंने हिन्दी में लिखना शुरू किया और धार्मिक तथा सामाजिक सुधारों से जुड़ी पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे। हिन्दी में ''सत्यार्थ प्रकाश'' उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना है। हिन्दी साहित्य को जिन लोगों ने समृद्ध बनाया है, उनमें मुंशी प्रेमचंद्र का नाम प्रमुख है जिन्होंने उर्दू से हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' को ख्याति मिली क्योंकि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अपने समाज की रूढ़ियों पर प्रश्नचिह्न लगाए। महादेवी वर्मा पहली महिला लेखिका हैं जिन्होंने नारियों से सम्बद्ध विषयों पर लिखा। मैथिलीशरण गुप्त एक अन्य नाम है जो उल्लेखनीय है। जयशंकर प्रसाद ने उत्कृष्ट नाटक लिखे।

आधुनिक समय में हिन्दी भाषा का विकास

18वीं सदी के अंतिम समय में आधुनिक हिन्दी भाषा का विकास हुआ। इस काल के प्रमुख लेखक थे सदासुख लाल तथा इन्शाल्लाह खान। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी हिन्दी भाषा को बढ़ावा दिया। इसी प्रकार राजा लक्ष्मण सिंह ने 'शाकुंतलम्' का हिन्दी में अनुवाद किया। इस समय हिन्दी विपरीत अवस्था में भी विकास कर रही थी क्योंकि कार्यालयों का कार्य उर्दू में किया जाता था।

हिन्दी साहित्य

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल तथा श्याम सुंदर दास हिन्दी भाषा के प्रमुख गद्य लेखक थे। जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', तथा हरिवंशराय बच्चन ने हिन्दी काव्य के विकास में महान योगदान किया है। इसी प्रकार प्रेमचन्द, वृंदावन लाल वर्मा, तथा इलाचन्द्रजोशी ने उपन्यास लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया।

यदि हम उपर्युक्त लेखकों को देखें तो हम पाते हैं कि उनका लेखन उद्देश्यपूर्ण लेखन था। स्वामी दयानंद ने हिन्दू समाज को सुधारने के लिए तथा मिथ्या विश्वास एवं सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए लेखन कार्य किया। मुंशी प्रेमचंद्र ने समाज का ध्यान गरीबों की दयनीय स्थिति की ओर आकर्षित करने के लिए लिखा। महादेवी वर्मा को दूसरा उच्चतम नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण मिला क्योंकि आपने समाज में महिलाओं की दशा का विस्तृत वर्णन किया। निराला आधुनिक भारत के जागृति के अग्रदूत बने।

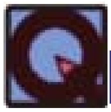

पाठगत प्रश्न 7.2

1. नाट्य शास्त्र के लेखक कौन हैं?

   ....

2. वाल्मीकि तथा तुलसीदास के राम के चरित्र में क्या भिन्नता है?

   ....

3. 'सूर सागर' के कृष्ण की भूमिका में क्या अंतर है?

   ....

4. हमारा राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम्' किस पुस्तक से लिया गया है?

   ....

टिप्पणी

5. आप ऐसा क्यों महसूस करते हैं कि हिन्दी लेखक किसी उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए लिखते थे?

....

7.4 बांग्ला, असमी और ओड़िया साहित्य

बांग्ला- हिन्दी के बाद सबसे अधिक समृद्ध साहित्य वह था जिसका बंगाल में विकास हुआ। 1800 ई. में बैप्टिस्ट मिशन प्रेस की स्थापना कलकत्ता के निकट सीरमपुर में की गई थी। इसी वर्ष ईस्ट इंडिया कंपनी ने फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की। इस महाविद्यालय में कंपनी के अधिकारियों को भारत के कानून, रीति-रिवाज, धर्म, भाषा एवं साहित्य का प्रशिक्षण दिया गया, ताकि वे अधिक कुशलतापूर्वक कार्य करने में सक्षम हो सके।

> भक्ति आंदोलन के विकास तथा चैतन्य की विभिन्न भक्तिपूर्ण रचनाओं ने बंगाली भाषा को विकसित करने में योगदान किया। ''मंगल काव्य'' के नाम से प्रसिद्ध कथात्मक कविताएँ इस काल में बहुत प्रसिद्ध हुईं। उन्होंने चण्डी जैसी स्थानीय देवियों की स्तुति का प्रचार किया तथा पौराणिक देवों जैसे शिव तथा विष्णु को घरेलू देवों के रूप में प्रस्तुत किया।

इस संबंध में विलियम करे ने एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित की। उन्होंने बांग्ला का व्याकरण लिखा और एक अंग्रेजी-बांग्ला शब्दकोश भी प्रकाशित किया। इसके अलावा उन्होंने संवाद और कहानियों की भी पुस्तकें लिखीं। साहित्य के विकास में व्याकरण और शब्दकोशों का महत्त्वपूर्ण योग होता है। वे लेखकों का इस बारे में मार्गदर्शन करते हैं कि सही वाक्य क्या है, साथ ही किसी विशेष स्थिति और विचार के लिए उपयुक्त शब्दों के चयन में भी सहायता करते हैं। यद्यपि धर्म प्रचारकों द्वारा चलाए जा रहे प्रेस का मुख्य उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था, लेकिन स्थानीय लोगों द्वारा चलाए जा रहे अन्य प्रेसों ने गैर-ईसाई साहित्य के विकास में सहायता की। विशाल संख्या में प्रचारपत्र, पुस्तिकाएं, छोटी और बड़ी पुस्तकें तथा अखबार प्रकाशित होने लगे। इस दौरान शिक्षा का प्रसार भी हुआ यद्यपि उसकी गति धीमी थी। जब मैकाले ने 1835 ई. में प्राच्यविदों के विरुद्ध अपनी लड़ाई जीत ली, तो शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हुआ। सन् 1854 ई. में सर चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में ''वुड् डिस्पैच'' आया और सन् 1857 में कलकत्ता, मद्रास और बंबई इन तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। स्कूल और कॉलेजों की पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य साहित्य भी प्रकाशित हुए। राजा राममोहन राय एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अंग्रेजी के अलावा बांग्ला में भी लिखा। इससे बांग्ला साहित्य को बल मिला। ईश्वरचंद्र विद्यासागर (1820-91) और अक्षय कुमार दत्त (1820-86) इस आरंभिक अवधि के दो अन्य लेखक थे। इनके अलावा बंकिम चंद्र चटर्जी (1834-94) और शरत् चंद्र चटर्जी (1876-1938) और आर.सी. दत्त, जो एक जाने माने इतिहासकार और गद्यलेखक थे, सभी ने बांग्ला साहित्य में योग दिया। किन्तु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाम रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) का है, जिन्होंने समस्त भारत को प्रभावित किया। उन्होंने उपन्यास, नाटक, लघुकथा, आलोचना, संगीत और निबंधों की रचना की। 1913 में 'गीतांजलि' के लिए उन्हें साहित्य का नोबल पुरस्कार भी मिला।

पश्चिमी विचारों के प्रभाव के संबंध में दो-तीन बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। उनका प्रभाव पहले बंगाल पर और बाद में देश के दूसरे हिस्सों पर पड़ा। सन् 1800 तक का अधिकांश साहित्य धर्म या दरबारी साहित्य तक ही सीमित था। विषय इहलौकिक थे। यों थोड़े बहुत धार्मिक-साहित्य की रचना भी हुई, पर उसमें कुछ नया नहीं था। पश्चिमी प्रभाव लेखकों को आम आदमी के निकट लाया।

उन्नीसवीं सदी के अंतिम और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में 'राष्ट्रवाद' साहित्य के एक नए विषय के रूप में उभरा। इस नई प्रवृत्ति में दो बातें देखी गई। एक ओर इतिहास और संस्कृति के प्रति सम्मान और अंग्रेजों द्वारा किए गए शोषण से संबंधित तथ्यों के संबंध में जागरूकता। वहीं, दूसरी ओर विदेशियों को भारत से खदेड़ने के लिए भारतीयों का आह्वान किया जाने लगा। इस नई प्रवृत्ति को सुब्रह्मण्यम भारती ने तमिल में और बांग्ला में काजी नजरूल इस्लाम ने अभिव्यक्त किया। पाठकों में राष्ट्रवादी भावनाओं को जगाने में इन दो लेखकों का योगदान आश्चर्यजनक था। इनके काव्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में भी किया गया।

असमी- बंगाली के समान, असमी भाषा भी भक्ति आंदोलन के कारण विकसित हुई। शंकरदेव ने असम में वैष्णवधर्म का प्रचार किया और असमी भाषा के विकास में योगदान किया। इसके साथ पुराणों का भी असमी भाषा में अनुवाद किया गया।

आरंभिक असमी साहित्य में बरोंजी (दरबारी इतिहास) प्रमुख था। शंकरदेव ने अनेक धार्मिक कविताएं लिखी हैं, जिन्हें लोग हर्षोन्मुक्त होकर गाते हैं। किन्तु 1827 ई. के बाद ही असमी साहित्य के सृजन में अधिक रुचि दिखाई देने लगी। लक्ष्मीकांत बेजबरूआ और पद्मनाभ गोसाईं बरूआ, ये दो नाम ऐसे हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता।

ओडिया- उड़ीसा से फकीरमोहन सेनापति और राधानाथ रे के नाम उल्लेखनीय हैं। इनका लेखन उड़िया साहित्य के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। ओडिया साहित्य में एक नये युग को जन्म देने का श्रेय उपेन्द्र भंजा (1670-1720) को जाता है। ओडिया भाषा में साहित्य कार्य में सरलदास काव्य उड़िया साहित्य की प्रथम साहित्यकृति कहलाती है।

पाठगत प्रश्न 7.3

1. बैप्टिस्ट प्रेस कहाँ और कब स्थापित किया गया?

   ....

2. ''चार्ल्स वुड' घोषणा पत्र कब जारी हुआ?

   ....

3. तीनों विश्वविद्यालय कहां और कब खोले गए?

....

4. श्री. आर.एन. टैगोर को 1913 में किस कृति के लिए नोबल पुरस्कार मिला?

....

5. शंकरदेव ने असमी काव्य में किस प्रकार वृद्धि की?

....

7.5 पंजाबी और राजस्थानी साहित्य

पंजाबी एक ऐसी भाषा है जिसके अनेक प्रतिरूप हैं। यह गुरुमुखी और फारसी दो लिपियों में लिखी जाती है। उन्नीसवीं सदी के अंत तक गुरुमुखी लिपि सिखों की धर्म-पुस्तक आदि ग्रंथ तक ही सीमित रही। गुरुद्वारों में पवित्र ग्रंथ साहब का पाठ करने वाले ग्रंथियों के अलावा बहुत कम लोगों ने इस लिपि को सीखने का प्रयास किया। परंतु इस भाषा में साहित्य का अभाव नहीं रहा। गुरु नानक पंजाबी के प्रथम कवि थे। कुछ अन्य समकालीन कवि, जिनमें ज्यादातर सूफी संत थे, इस भाषा में गाया करते थे। इन सूफियों या इनके अनुयायियों ने जब अपनी कविता को लिखित रूप देना चाहा तो फारसी लिपि का प्रयोग किया। इन कवियों की सूची में पहला नाम फरीद का है। उनके काव्य को आदिग्रंथ में भी स्थान मिला है। आदिग्रंथ में अगले चार गुरुओं का काव्य भी सम्मिलित है। यह समस्त साहित्य पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी से संबंधित है। बाद के गुरुओं में नौवे गुरु गुरुतेग बहादुर के काव्य ने भी आदिग्रंथ में स्थान पाया है। दसवें गुरु गुरुगोविंद सिंह ने पटना (बिहार) में शिक्षा प्राप्त की, जहां उन्होंने फारसी और संस्कृत सीखी। उन्होंने पंजाबी में दो सवैयों की रचना की लेकिन ये आदिग्रंथ के भाग नहीं हैं।

इस भाषा ने अपने आरंभिक दिनों में ही हीर-रांझा, ससी-पुन्नु और सोहनी महीवाल की प्रेम कहानियों को अपना मूल विषय बनाया। पूरण भगत की कहानी भी कुछ कवियों के लिए प्रेरणा-स्रोत बनी। कुछ ज्ञात और अज्ञात कवियों द्वारा लिखी गई कविताएं भी इस भाषा में हमें उपलब्ध होती हैं। गत दो सौ या तीन सौ वर्षों से स्थानीय गायक इन्हें गा रहे हैं। स्थानीय रचनाकारों द्वारा रचित अनेक अन्य कथाकाव्य भी हैं। यह लोक साहित्य सुरक्षित रखा गया है। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, वारिस शाह की 'हीर'। आरंभिक रचनाओं में यह सर्वाधिक लोकप्रिय है। पंजाबी काव्य में इसका उल्लेखनीय स्थान है। बुल्लेशाह की लोकप्रियता भी ठीक ऐसी ही है जो एक सूफी संत थे। उन्होंने अनेक गीत लिखे। उनकी रचनाओं का एक लोकप्रिय रूप था कैफी। यह शास्त्रीय तरीके से गाया जाता है। ''कैफी'' को लोग काफी उत्साह के साथ आज भी गाते हैं।

बीसवीं सदी में, पंजाबी स्वतंत्र भाषा के रूप में स्थापित हो गई। भाई वीर सिंह ने 'राणा सूरत सिंह' नामक एक महाकाव्य की रचना की। पूरनसिंह और डा. मोहन सिंह सबसे

प्रसिद्ध लेखकों में हैं। निबंध, लघु कथा, उपन्यास, आलोचना और लेखन के अन्य रूपों ने पंजाबी के साहित्यिक परिदृश्य को अलंकृत किया है।

राजस्थानी भाषा- राजस्थानी, हिन्दी की ही एक बोली है, पर इसका भी एक अपना योगदान है। भाट (घुमंत गायक) एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूम-घूम कर लोगों का मनोरंजन करते रहे और वीरों की कहानियों को उन्होंने जीवित रखा। कर्नल टाड ने इन्हीं गाथागीत गायकों से राजस्थान के वीरों की कहानियों का संग्रह किया, और इन्हें एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑव राजस्थान (राजस्थान का इतिहास और उसकी प्राचीनता) नामक ग्रंथ में संकलित किया। परन्तु मीराबाई के धार्मिक गीतों का राजस्थानी भाषा और राजस्थानी धार्मिक संगीत के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान है। अपने प्रभु (भगवान कृष्ण) के प्रति मीराबाई का प्रेम कई बार इतना गहन हो जाता है कि आपको इस लौकिक संसार से उठाकर गायिका की भावभूमि में ले जाता है।

> भक्ति आंदोलन के विकास ने विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं जैसे हिन्दी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, कन्नड़, तमिल, तेलगु आदि का उदय करने में नेतृत्व किया।

7.6 गुजराती साहित्य

आरंभिक गुजराती साहित्य भी सामान्यत: चौदहवीं व पन्द्रहवीं शताब्दी के भक्ति गीतों के रूप में उपलब्ध है। यह प्राचीन परंपरा गुजरात में अभी भी लोकप्रिय है। नरसी मेहता का नाम इस संबंध में सर्वोपरि है। गुजरात के लोगों ने अपने लोक नृत्यों में इन भक्ति गीतों को सम्मिलित कर लिया है और धार्मिक समारोहों में धार्मिक तरीके से इनकी प्रस्तुति की जाती है।

नर्मद के काव्य ने गुजराती साहित्य को एक नई ऊर्जा दी। गोवर्धन राम के उपन्यास 'सरस्वती चंद्र' भी श्रेष्ठ रचनाओं में स्थान पा चुका है और इसने अन्य लेखकों को प्रेरणा दी है। किंतु डा. के एम. मुंशी का नाम शायद ही कभी भुलाया जा सकेगा। वे उपन्यासकार, निबंधकार और इतिहासकार थे तथा उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों का बहुत बड़ा भंडार हमें दिया है। इन पुस्तकों में उन्होंने तथ्यों और कल्पनाओं का समन्वय करने की अपनी योग्यता का परिचय दिया है। 'पृथ्वी वल्लभ' उनका एक उत्कृष्ट उपन्यास है। नरसी मेहता का नाम विशेष रूप से लिया जाना चाहिए, जिनके कृष्ण की प्रशंसा में रचित भक्ति-गीतों ने उन्हें प्रसिद्धि ही नहीं दी बल्कि गुजराती भाषा को भी लोकप्रिय बनाया।

7.7 सिंधी साहित्य

सिंध सूफियों का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। सूफियों ने विभिन्न स्थानों पर खानकाह स्थापित किए थे। भक्ति संगीत के दीवाने सूफी गायकों ने इस भाषा को और भी लोकप्रिय बनाया। सिंधी में साहित्य सृजन का श्रेय मिर्जा कलिश बेग और दीवान कौरामल को भी जाता है।

7.8 मराठी साहित्य

महाराष्ट्र एक पठारी प्रदेश है, और यहाँ इस क्षेत्र में अनेक स्थानीय बोलियों का प्रयोग होता था। इन्हीं स्थानीय बोलियों से मराठी का जन्म हुआ है। पुर्तगाली धर्म प्रचारकों ने मराठी भाषा का प्रयोग अपने धार्मिक सिद्धांतों का उपदेश देने के लिए किया।

प्रारंभिक मराठी कविता और गद्य की रचना तेरहवीं शताब्दी के संत ज्ञानेश्वर ने की। उन्होंने भगवद्गीता की दीर्घ टीका भी लिखी। उन्होंने महाराष्ट्र में कीर्तन परंपरा भी आरंभ की। उनके बाद नामदेव (1270-1350), गोरा, सेना और जानाबाई आए। इन सबने मराठी भाषा में गीत गाए और इसे लोकप्रिय बनाया। पढ़रपुर तीर्थ को जाते हुए वरकारी तीर्थ यात्री आज भी इनके गीतों को गाते हैं। लगभग दो शताब्दियों के बाद, एकनाथ (1533-99) मराठी साहित्य के परिदृश्य पर उभर कर आए। उन्होंने रामायण और भागवत् पुराण पर टीकाएँ लिखीं। पूरे महाराष्ट्र में इनके गीत आज भी बहुत लोकप्रिय हैं।

इसके बाद तुकाराम (1598-1650) का आगमन हुआ। इन्हें सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि माना जाता है। शिवाजी के गुरु, रामदास (1608-81), इन भक्त-रचनाकारों में अंतिम हैं। वे 'राम' के भक्त थे। वे शिवाजी के प्रेरणास्रोत बने। उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में मराठी साहित्य में एक बड़ा परिवर्तन आया। राष्ट्रीय आंदोलन ने मराठी गद्य को अत्यधिक लोकप्रिय और विशिष्ट बनाया। बाल गंगाधर तिलक (1857-1920) ने मराठी में अपना पत्र 'केसरी' निकालना आरंभ किया। इससे मराठी साहित्य के विकास में सहायता मिली। किन्तु केशव सुत और वी.एस. चिपलङ्कर का योगदान भी कुछ कम न था। हरिनारायण आप्टे और अगरकर ने लोकप्रिय उपन्यास लिखे। मराठी साहित्य के विकास में इन सब गद्य लेखकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। एच.जी. सालगांवकर का नाम प्रेरक काव्य रचना के लिए याद किया जाता है। इसके अलावा एम.जी. रानाडे, के.टी. तेलंग, जी.टी. माद्योलकर (कवि और उपन्यासकार) का योगदान भी कम महत्वपूर्ण न था।

7.9 कश्मीरी साहित्य

कश्मीर को साहित्यिक जगत में सम्मानजनक स्थान तब मिला जब कल्हण ने संस्कृत में राजतरंगिणी लिखी। किन्तु यह अभिजात वर्ग की भाषा में लिखी गई थी। स्थानीय लोगों के लिए, कश्मीरी लोकप्रिय भाषा थी। यहाँ भी भक्ति आंदोलन ने अपनी भूमिका निभाई। चौदहवीं सदी की लालदेबी, कश्मीरी भाषा की संभवतः पहली कवयित्री थीं। वे शैव रहस्यवादी कवयित्री थीं। इस क्षेत्र में इस्लाम के प्रसार के बाद सूफी प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होने लगा। हाबा खातून, महजूर, जिंदा कौल, नूरदीन के नाम से विख्यात नंद ऋषि, अख्तर मोहिउद्दीन, सूफी गुलाम मोहम्मद और दीनानाथ नदीम ने कश्मीरी में भक्ति काव्य की रचना की। इन लोगों ने कश्मीरी साहित्य के विकास में अमूल्य योगदान दिया।

उन्नीसवीं सदी के अंत तक पश्चिमी प्रभाव कश्मीर तक नहीं पहुंचा था। प्रथम सिक्ख युद्ध के बाद 1846 में जम्मू के डोगरा यहां के शासक बने। डोगरा शासक कश्मीरी की अपेक्षा

डोगरी भाषा में अधिक रुचि लेते थे। न तो वहां कोई विद्यालय था, और न ही शिक्षा की व्यवस्था थी। यहां चारों ओर गरीबी और आर्थिक पिछड़ापन था। कश्मीरी में अच्छा साहित्य न लिखे जाने के पीछे यही कारण था।

यद्यपि आधुनिक भारतीय भाषा की सूची में अनेक भाषाएँ लिखी जा सकती हैं तथापि भारत के संविधान में मूलरूप से लगभग पन्द्रह भाषाएँ राष्ट्रीय भाषा के रूप में सम्मिलित हैं– जैसे असमी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, उर्दू, तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम। अन्य तीन भाषाएँ नेपाली, मणिपुरी, कोङ्कनी को तथा चार भाषाएं बोडो, मैथिली, संथाली व डोगरी अब इस सूची में शामिल किया गया है।

पाठगत प्रश्न 7.4

1. गुरुमुखी और फारसी दो लिपियों में कौन सी भारतीय भाषा लिखी गई है?

   ....

2. पंजाब की कम से कम दो प्रेम कहानियों के नाम लिखें।

   ....

3. बुल्लेशाह के लेखन कार्यो की कौन-सी शैली प्रसिद्ध है?

   ....

4. गोवर्धन राम के उपन्यास का नाम बताएँ।

   ....

5. तेरहवीं शताब्दी में महाराष्ट्र में किसने कीर्तन परंपरा को प्रारम्भ किया?

   ....

6. कश्मीरी में कम साहित्य लिखे जाने का कारण बताएँ।

   ....

7.10 ईसाई धर्म प्रचारकों की भूमिका

भारत में यूरोपीय अंग्रेजों के आने से इंग्लिश, फ्रैंच, डच तथा पुर्तगाली आदि विभिन्न भाषाएँ भी आईं जिनसे भारतीय भाषाएँ भी समृद्ध हुईं और उन्होंने अपने शब्द भण्डार में अनेक नये-नये शब्दों को समाहित कर लिया।

ईसाई धर्म प्रचारकों ने भी भारतीय साहित्य के विकास में सार्थक योगदान दिया। सबसे पहले उन्होंने शब्दकोशों और व्याकरण की पुस्तकों को विभिन्न स्थानीय भाषाओं में प्रकाशित करवाया। उनकी पुस्तक यूरोप से आए नए पादरियों के लिए लिखी गयी थीं। इन पुस्तकों ने ईसाई धर्म प्रचारकों की भी सहायता की और स्थानीय भाषाओं के लेखकों की भी। वे शब्दकोशों की सहायता उपयुक्त शब्द तलाशने के लिए या यह देखने के लिए ले सकते थे कि कोई शब्द व्याकरण की दृष्टि से सही है या नहीं।

दूसरा तथ्य, लिथोग्राफिक छापाखाने की भूमिका है। उन्नीसवीं सदी के आरंभ में इन मशीनों (प्रेसों) की स्थापना भारत में की गई। विदेशियों ने इन प्रेसों की स्थापना ईसाई धर्म में नवदीक्षित या दीक्षित होने वाले संभावित व्यक्तियों के लिए स्थानीय भाषाओं में साहित्य छापने के लिए की थी। अतः साहित्य के विकास में छापाखानों की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता। तीसरा, महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा स्कूलों और कालेजों की स्थापना की गई। यहाँ अंग्रेजी के अलावा उन्होंने स्थानीय भाषाएँ भी पढ़ाईं। उनका उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना था, किन्तु उन्होंने एक नवशिक्षित वर्ग भी तैयार किया, जिसकी आकांक्षा इस नव सृजित साहित्य को पढ़ने की थी। अतः ईसाई भारतीय भाषाओं और साहित्य का इतिहास लिखते समय धर्मप्रचारकों की भूमिका को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

भारत में अंग्रेजी साहित्य के मुख्य लेखक

भारत में अंग्रेजी साहित्य के अनेक लेखक थे। भारतीयों ने 1835 के बाद अंग्रेजी में लिखना आरंभ किया जब अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बन गई। अनेक भारतीय लेखकों ने अपना साहित्य अंग्रेजी में लिखा।

कुछ लेखकों ने कविता में रुचि दिखाई जबकि दूसरों ने गद्य लेखन में कार्य किया। मिशेल मधु सूदन दत्ता, तारादत्ता, सरोजिनी नायडू तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अंग्रेजी काव्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम किया। सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी, फिरोज शाह मेहता तथा जवाहलाल नेहरु ने अंग्रेजी गद्य में रुचि दिखाई।

आपने क्या सीखा

- हिन्दी बहुसंख्यक लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा थी।
- मुगल काल में उर्दू और फारसी भाषाएँ लोकप्रिय हुईं। उर्दू का जन्म नए तुर्की निवासियों और आम लोगों के बीच संवाद के माध्यम से हुआ। अबुल फैज़ी, चन्द्रभान और बदायूनी मुगल काल के प्रसिद्ध लेखक थे।
- हिन्दी साहित्य ने मार्गदर्शन के लिए संस्कृत के कालजयी साहित्य को आधार बनाया। भक्ति काव्य हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है। कबीर, तुलसीदास तथा सूरदास हिन्दी साहित्य के मार्गदर्शक बने।

- उन्नीसवीं सदी के आरंभ में हिन्दी गद्य अस्तित्व में आया।
- हिन्दी के अतिरिक्त बांग्ला साहित्य बहुत संपन्न है। रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिम चन्द्र चटर्जी, शरतचन्द्र चटर्जी ने बांग्ला साहित्य के लेखन में योगदान किया। असमी साहित्य में बुरोंजी शामिल हैं। इसी प्रकार उड़िया में भी समृद्ध साहित्य प्राप्त होता है।
- उन्नीसवीं सदी के अंत तक गुरुमुखी आदिग्रंथ तक सीमित थी। हीर-रांझा जैसी प्रेम कहानियों ने इस भाषा को बढ़ावा दिया। मीराबाई के भक्ति गीतों से राजस्थानी भाषा और साहित्य को सम्मान मिला।
- गुजराती, सिंधी, मराठी और कश्मीरी भाषाओं में भी समय के साथ साहित्य की रचना हुई।
- अनेक भारतीय लेखकों ने अपना साहित्य अंग्रेजी में लिखा है।

पाठांत प्रश्न

1. भारत में ईसाई धर्म प्रचारकों का क्या योगदान था?
2. हिन्दी भाषा के विकास का संक्षिप्त वर्णन करें।
3. मध्यकालीन भारत में फारसी भाषा की भूमिका का विवेचन कीजिए।
4. भारतीय भाषाओं तथा उनके साहित्य ने भारतीय समाज में जो योगदान किया उसकी समीक्षा कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1
1. ब्रजभाषा, अवधि, भोजपुरी, मगधी, राजस्थानी, खड़ी बोली।
2. अवधि
3. भारत में आश्रित तुर्की लोगों के स्थानीय लोगों के साथ अन्तर्व्यवहार से उर्दू का जन्म हुआ।
4. पाकिस्तान
5. दक्षिणी या दक्खनी (दक्षिणी)

7.2
1. भरत (मुनि)
2. तुलसीदास ने राम को "भगवान" के रूप में चित्रित किया जबकि वाल्मीकि ने उनको मनुष्य रूप में दिखाया।

3. सूरसागर में कृष्ण बालरूप में अपनी नटखट शरारतों में तथा एक युवक के रूप में गोपियों के साथ प्रेम भाव में भिन्नता लिये हुए है।
4. आनन्द मठ
5. स्वामी दयानन्द ने हिन्दु समाज को सुधारने के लिए लिखा। मुंशी प्रेमचन्द्र ने गरीबों की दु:खदायक स्थिति के विषय में लिखा। महादेवी ने स्त्रियों की दु:खद स्थिति पर लिखा।

7.3
1. 1800 में कलकत्ता के पास सीरमपुर में
2. 1854
3. 1857 में कलकत्ता, मद्रास, मुम्बई में
4. गीतांजलि
5. उन्होंने आसाम में वैष्णव धर्म का प्रारम्भ किया

7.4
1. पंजाबी
2. हीर/रांझा, सोहनी/महिवाल, सस्सी/पुन्नु
3. कैफ़ी/काफ़ी
4. सरस्वती चन्द्र
5. सन्त ज्ञानेश्वर
6. गरीबी, आर्थिक पिछड़ापन तथा डोगरी का प्रयोग